11119CH08

अष्टम अध्याय

कथा साहित्य

नीतिकथा और लोककथा

संस्कृत भाषा में प्राचीनकाल से ही नीतिकथाओं और लोककथाओं का साहित्य लिखा जाता रहा है। कथा के द्वारा बालकों को शिक्षित करने एवं जन-सामान्य का मनोरञ्जन करने की प्रवृत्ति सभी देशों में है। प्राचीन भारत में भी कथा के माध्यम से कल्पना शक्ति को बढ़ाने का प्रयास किया गया है। मनोरञ्जन के विविध माध्यमों में कथा कहना और सुनना बहुत समर्थ तथा शक्तिशाली साधन है। ब्राह्मण-ग्रन्थों, उपनिषदों, बौद्ध-जातकों तथा पुराणों में अनेक कथाएँ दी गई हैं, जिनमें शिक्षा और मनोरञ्जन दोनों उद्देश्य पूरे होते हैं। भारत का प्राचीनतम कथासङ्ग्रह *पञ्चतन्त्र* है। उसके बाद भी कथा साहित्य की परम्परा अविच्छिन्न चलती है।

पञ्चतन्त्र

पञ्चतन्त्र में पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों को भी पात्र बनाकर कथाएँ कही गई हैं। इन कथाओं में उपदेश देने की अद्भुत क्षमता है। *पञ्चतन्त्र* की सभी कहानियों में नैतिक शिक्षा दी गई है। आचार और नीति में कुशलता प्रदान करना इन कथाओं का मुख्य उद्देश्य है। *पञ्चतन्त्र* में ही कहा गया है कि शिक्षा से दूर भागने वाले राजकुमारों को आचार-व्यवहार का ज्ञान देने के लिए ये कथाएँ कही गई हैं। नीति शिक्षा यहाँ पद्यों द्वारा की गई है।

पञ्चतन्त्र में कथाओं को परस्पर सम्बद्ध करके इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि कथा के अन्तिम श्लोक में अगली कथा का संकेत मिलता है और पुन: वह सङ्केतित कथा चल पड़ती है। इसी प्रकार कथा में कथा को जन्म देकर एक शृंखला बनाई गई है। मुख्य कथा का सूत्र स्मरण रखना होता है। कथा में उत्सुकता बढ़ाने का प्रयास *पञ्चतन्त्र* में सर्वत्र प्राप्त होता है। इसमें पाँच खण्ड हैं। इन खण्डों को *तन्त्र* कहा गया है। ये हैं— मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक। इनमें कुल सत्तर कथाएँ मिलती हैं तथा 900 श्लोक हैं।

© NCERT not to be republished

पञ्चतन्त्र के लेखक का नाम विष्णुशर्मा है। इनके व्यक्तित्व तथा समय के विषय में कुछ कहना कठिन है। बहुत से लोग विष्णुशर्मा को कौटिल्य या चाणक्य से सम्बद्ध मानते हैं। *पञ्चतन्त्र* के अनुसार वे सभी शास्त्रों में पारंगत थे और वैदिक धर्म के अनुयायी थे। अर्थशास्त्र का सार उन्होंने इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। महिलारोप्य नामक नगर के राजा अमरसिंह के तीन मूर्ख पुत्रों को छ: मास में राजनीति और व्यवहार में पटु बनाने के लिए *पञ्चतन्त्र* लिखा गया था। *पञ्चतन्त्र* का प्रचार विदेशों में भी हुआ है। ईसा की छठी शताब्दी में इसका अनुवाद पहलवी भाषा में हुआ था, जिससे एक ईसाई पादरी ने सीरियन भाषा में अनुवाद किया। यही अनुवाद यूरोप और पश्चिमी एशिया की भाषाओं में *पञ्चतन्त्र* के अनुवाद का आधार बना। इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड तथा अन्य पूर्वी देशों में भी *पञ्चतन्त्र* की कथाएँ अनुवादों के माध्यम से पहुँचीं। इस प्रकार यूरोप और एशिया की अधिकांश भाषाओं में *पञ्चतन्त्र* अपनी रोचकता के कारण पहुँच गया।

इसमें अत्यन्त सरल भाषा का प्रयोग है। यह संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए भाषा और शैली को सीखने का उत्तम साधन है। मध्यपूर्व में इसकी प्रसिद्धि बुद्धिविषयक पुस्तक (अक्ल की किताब) के रूप में है।

हितोपदेश

पञ्चतन्त्र का अनुसरण करते हुए नारायण पंडित ने नीति-कथाओं के संग्रह के रूप में *'हितोपदेश'* नामक एक लघुग्रन्थ लिखा है। इनका समय चौदहवीं शताब्दी ई. माना जाता है। *हितोपदेश* की 43 कथाओं में 25 *पञ्चतन्त्र* से ली गई हैं। नारायण पण्डित के आश्रयदाता बंगाल के राजा धवलचन्द्र थे। *हितोपदेश* में चार परिच्छेद हैं— *मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह* और *सन्धि*। कथा से कथा आरम्भ करने की पद्धति इसमें भी *पञ्चतन्त्र* के समान ही है। बंगाल में रचित इस ग्रन्थ की लोकप्रियता सम्पूर्ण भारत में है। इसमें अनेक रोचक और शिक्षाप्रद श्लोक आए हैं, जैसे-मूर्खों को उपदेश देने से उनका क्रोध बढ़ता है, शान्त नहीं होता **(उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये)।** वह माता शत्रु है और वह पिता वैरी है, जिसने अपने बच्चे को नहीं पढ़ाया। जिस प्रकार हंसों के बीच बगुला नहीं सुशोभित होता, उसी प्रकार अशिक्षित बालक सभा में शोभा नहीं पाता—

माता शत्रु: पिता वैरी येन बालो न पाठित:।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

हितोपदेश पञ्चतन्त्र की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय है। इसके उपदेश हृदय पर शीघ्र प्रभाव डालते हैं।

Reprint 2026-27

बृहत्कथा

यह गुणाढ्य के द्वारा पैशाची भाषा में लिखी गई कथा थी। मूल ग्रन्थ अब उपलब्ध नहीं है। गुणाढ्य का काल ईसा की प्रथम शताब्दी माना जाता है। कश्मीर की जनश्रुति के अनुसार *बृहत्कथा* श्लोकों में थी, किन्तु दण्डी इसे गद्य रचना के रूप में संकेतित करते हैं। गुणाढ्य ने लोक-जीवन में प्रचलित कथाओं का संकलन करके उसकी रचना की थी। इसका नायक उदयन का पुत्र नरवाहनदत्त है और नायिका मदनमञ्जूषा है, जिसका अपहरण मानसवेग कर लेता है। मन्त्री गोमुख की सहायता से राजकुमार मदनमञ्जूषा को पाकर विद्याधरों का राजा बनता है। आलोचकों ने उस पर *रामायण* के सीता-हरण का प्रभाव बतलाया है। अनेक संस्कृत कवियों ने इसके लेखक गुणाढ्य की प्रशंसा की है। *बृहत्कथा* के कथानक को जानने के साधन संस्कृत भाषा में लिखे गए कतिपय ग्रन्थ हैं, जैसे— *बृहत्कथामञ्जरी, कथासरित्सागर* इत्यादि।

बृहत्कथा श्लोकसंग्रह

यह बुधस्वामी के द्वारा बृहत्कथा का संक्षिप्त रूपान्तर है। इनमें आज 28 सर्ग प्राप्त होते हैं, जिनमें 4500 श्लोक हैं। बुधस्वामी का काल छठी या सातवीं शताब्दी ई. माना जाता है। ये नेपाल के निवासी थे। नायक और नायिका के चरित्र और उनके पारस्परिक सम्बन्ध का इसमें अधिक संगत निर्वाह हुआ है। इसकी शैली सरल, स्पष्ट और गतिशील है। काव्य के अलंकरण घटनाक्रम को अवरुद्ध नहीं करते।

बृहत्कथामञ्जरी

बृहत्कथा का यह संक्षिप्त संस्कृत संस्करण क्षेमेन्द्र द्वारा महाकाव्य के रूप में लिखा गया है। इसमें 7500 श्लोक हैं। क्षेमेन्द्र (995—1070 ई.) कश्मीरी कवि थे। इन्होंने *महाभारत* और *रामायण* के जिस प्रकार संक्षिप्त संस्करण बनाए, उसी पद्धति से उन्होंने *बृहत्कथामञ्जरी* भी लिखी। मूल कथाओं में काट-छाँट होने से दुरूहता उत्पन्न हो गई है। अत: वर्णन प्राय: शुष्क हो गए हैं। नरवाहनदत्त पर केन्द्रित इस काव्यात्मक कथा में अनेक उपकथाएँ दी गई हैं, जिससे मूल कथावस्तु शिथिल हो गई है। क्षेमेन्द्र ने इसमें अनेक विच्छिन्न कथाओं को परस्पर गूँथने का प्रयास किया है।

कथासरित्सागर

यह *बृहत्कथा* का सबसे बड़ा उपलब्ध संस्कृत संस्करण है, जिसमें 24,000 श्लोक हैं।

Reprint 2026-27

© NCERT not to be republished

इसके लेखक सोमदेव कश्मीर के निवासी थे। ये क्षेमेन्द्र के समकालिक थे। उन्होंने राजा अनन्त की पत्नी सूर्यमती के विनोद के लिए 1063 तथा 1081 ई. के बीच इस ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ का विभाजन लम्बकों और तरङ्गों में किया गया है।

सोमदेव ने इसमें सरस एवं अलङ्कृत शैली का प्रयोग किया है। कश्मीर के विदूषकों और सामान्य जनों की कहानियाँ भी इसमें जोड़ी गई हैं। अन्धविश्वास, जादूगरी, शैवमत, बौद्धमत, कर्मवाद, शिवपूजा, मातृपूजा इत्यादि का चित्रण इस ग्रन्थ में कुशलता से किया गया है। सोमदेव की कथा-शैली सरल और प्रवाहमय है। कठिन शब्दों और जटिल कथानकों का प्रयोग ये नहीं करते। कुल मिलाकर *कथासरित्सागर* अत्यन्त लोकप्रिय है।

वेतालपञ्चविंशतिका

यह लोकप्रिय कथाओं का संग्रह है। इसका प्राचीनतम रूप *बृहत्कथामञ्जरी* और *कथासरित्सागर* में मिलता है। इसमें 25 कहानियाँ दी गई हैं। इसके कई संस्करण प्राप्त होते हैं। पहला संस्करण शिवदास का है जिसमें कहीं-कहीं श्लोक भी मिलते हैं। इस प्रकार यह गद्य-पद्यात्मक संस्करण है। दूसरा संस्मरण बिल्कुल गद्यात्मक है, जो जम्भलदत्त के द्वारा बनाया गया है। ये दोनों संस्करण चौदहवीं शताब्दी के पहले ही बन चुके थे। इसकी कथाएँ इतनी लोकप्रिय हैं कि भारत की सभी भाषाओं में अनुवाद के रूप में पाई जाती हैं।

इसमें विक्रमसेन (विक्रमादित्य) की कथाएँ हैं। कोई सिद्ध पुरुष राजा को रत्नगर्भित फल देता है और उसकी सिद्धि में सहायता के लिए राजा को एक वृक्ष पर लटकते हुए शव को लाने के लिए कहता है। वह शव किसी वेताल के वश में है, जो शव ले जाते समय राजा को चुप रहने के लिए कहता है, किन्तु वेताल ऐसी विचित्र कथाएँ सुनाता है कि राजा को बोलना ही पड़ता है। वेताल के प्रश्न अत्यन्त जटिल हैं, किन्तु राजा का उत्तर भी बड़ा सुन्दर होता है। इस प्रकार ग्रन्थ पहेली और उसके उत्तर के रूप में है। इन कथाओं से बुद्धि की परीक्षा होती है।

सिंहासनद्वात्रिंशिका (द्वात्रिंशत्पुत्तलिका)

यह एक मनोरञ्जक कथा-संग्रह है, जिसमें 32 पुतलियाँ राजा भोज को 32 कहानियाँ सुनाती हैं। राजा भोज भूमि में गड़े हुए विक्रमादित्य के सिंहासन को उखाड़ता है और उस पर बैठना चाहता है, किन्तु उस सिंहासन में जड़ी हुई 32 पुतलियाँ एक-एक करके विक्रमादित्य के पराक्रम को सुनाती हैं और राजा भोज को अयोग्य सिद्ध करके उस पर बैठने से रोकती हैं। इस कथा के दो संस्करण प्राप्त होते हैं— दक्षिण भारतीय और उत्तर

Reprint 2026-27

भारतीय। उत्तर भारतीय संस्करण में भी तीन पाठ मिलते हैं— जैन पाठ, बंगाली पाठ तथा लघु पाठ। दक्षिण भारतीय संस्करण *विक्रमचरित* कहलाता है। इसके भी पद्यबद्ध और गद्यबद्ध दो पाठ हैं। इनमें कौन सा संस्करण मौलिक है, कहा नहीं जा सकता।

शुकसप्तति

यह एक लोकप्रिय रचना है, जिसमें 70 कहानियाँ संकलित हैं। इसका वक्ता एक तोता है। मदनसेन नामक व्यापारी अपनी पत्नी से दृढ़ अनुराग रखता है, किन्तु उसे कार्यवश परदेश जाना पड़ता है। जाते समय वह पत्नी की देखभाल के लिए तोते को छोड़ जाता है।

जब नववधू अपने सती-धर्म को छोड़ने के लिए उद्यत होती है, तब तोता प्रत्येक रात को एक कहानी सुनाता है। कहानी से मनोरञ्जन तो होता है, वियोग की पीड़ा भी दूर होती है और वह स्त्री पथभ्रष्ट होने से बच जाती है। सत्तरहवीं कहानी पूरी होते ही उसका पति विदेश से लौट आता है। इन कहानियों में दुश्चरित्र स्त्रियों की चतुरता का वर्णन है। ये सभी कहानियाँ उपदेशप्रद, रोचक तथा सरल हैं। इनकी रचना गद्य में हुई है, किन्तु कहीं-कहीं पद्य भी हैं।

इस ग्रन्थ के दो पाठ मिलते हैं— एक पाठ चिन्तामणि भट्ट रचित है और दूसरा किसी जैन मतावलम्बी लेखक का है।

अन्य कथा ग्रन्थ

संस्कृत भाषा के कथा ग्रन्थ कई प्रकार के हैं। बौद्धों, जैनों तथा वैदिक धर्म वाले लेखकों ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रचलित कथाएँ गद्य-पद्य में लिखीं। इनमें कुछ का उद्देश्य तो शुद्ध मनोरञ्जन था, किन्तु अधिकांश लेखकों ने धार्मिक एवं नैतिक उपदेश के लिए ही कथाएँ लिखीं। बौद्ध लोक कथाओं का प्राचीनतम ग्रन्थ *अवदान शतक* है, जिसका चीनी भाषा में अनुवाद तीसरी शताब्दी ई. में हो गया था। अत: यह इसके पूर्व की रचना है। इसकी कहानियाँ उपदेशों से भरी हैं। दूसरा प्रमुख कथा ग्रन्थ *दिव्यावदान* है, जिसमें साहित्यिक सौन्दर्य तो नहीं, किन्तु कथाएँ रोचक हैं। अशोक के पुत्र कुणाल की करुण कथा इसमें आई है, जिसकी आँखें उसकी विमाता ने निकलवा ली थी। इसका रचनाकाल दूसरी शताब्दी ई. है। आर्यशूर कृत *जातकमाला* भी बौद्ध कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसमें बोधिसत्त्व की 34 कथाएँ हैं। इसमें महायान धर्म के अनुसार बोधिसत्त्व के दिव्य कर्मों का वर्णन किया गया है। इसका उद्देश्य भी आचारपरक शिक्षा देना था। *जातकमाला पञ्चतन्त्र*

Reprint 2026-27

के समान गद्य-पद्यात्मक रचना है, किन्तु इसकी शैली कुछ अलङ्कृत है और लम्बे समास भी आए हैं। इसका समय तीसरी-चौथी शताब्दी ई. है।

जैनों ने भी अनेक कथाएँ लिखीं। इनकी अधिकांश कथाएँ प्राकृत में हैं, किन्तु संस्कृत में भी उनके कुछ कथा ग्रन्थ मिलते हैं। सिद्धार्थ (900 ई.) की *उपमितिभवप्रपञ्चकथा* में प्रतीकात्मक रूप से आत्मा का वर्णन है। मेरुतुङ्ग ने *प्रबन्ध चिन्तामणि* की रचना 1305 ई. में की थी। इसमें पाँच प्रकाश हैं, जिनमें कई प्राचीन राजाओं, विद्वानों और कवियों का वृत्तान्त लिखा गया है। एक अन्य जैन कवि राजशेखर (1350 ई.) ने प्रबन्धकोश लिखा, जिसमें 24 प्रसिद्ध व्यक्तियों की जीवनी है।

विद्यापति (चौदहवीं शताब्दी ई.) ने *पुरुष-परीक्षा* की रचना लोगों को लोकनीति का ज्ञान देने के लिए की थी। इसमें 44 कथाएँ हैं, जो मानवीय गुणों का प्रतिपादन करती हैं। सोलहवीं शताब्दी में वल्लालसेन ने *भोजप्रबन्ध* लिखा, जिसमें राजा भोज और कालिदास के विषय में प्रचलित दन्तकथाओं का गद्य-पद्यात्मक संग्रह है। इस प्रकार सभी मतावलम्बियों की अपनी-अपनी कथाएँ हैं, जिनसे मनोरञ्जन ओर नीतिशिक्षा की प्राप्ति होती है। ये कथाएँ आज भी नवयुवकों को जीवन-यापन की दिशा देने में पूर्ण समर्थ हैं।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

ध्यातव्य बिन्दु

- कथा के द्वारा बालकों को शिक्षित करने के लिए संस्कृत में भी अनेक लोक-कथाएँ और नीतिकथाएँ लिखी गई हैं।
- विष्णुशर्मा द्वारा रचित *पञ्चतन्त्र* में पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों को पात्र बनाकर कथाएँ कही गई हैं। इसमें पञ्च तन्त्र हैं— मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपीरीक्षितकारक।
- हितोपदेश— नारायण पण्डित द्वारा रचित *हितोपदेश* में *पञ्चतन्त्र* का अनुसरण करते हुए नीतिकथाएँ संकलित हैं। इसमें चार परिच्छेद हैं— मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह और सन्धि।
- बृहत्कथा— गुणाढ्य ने पैशाची प्राकृत में *बृहत्कथा* की रचना की।
- बृहत्कथाश्लोकसंग्रह— बुधस्वामी ने संस्कृत भाषा में *बृहत्कथाश्लोकसंग्रह* ग्रन्थ की रचना की जो *बृहत्कथा* का संक्षिप्त रूपान्तर है।
- बृहत्कथामञ्जरी— कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने महाकाव्य की शैली में *बृहत्कथा* का संस्कृत रूपान्तर किया है।
- कथासरित्सागर— सोमदेव द्वारा रचित *कथासरित्सागर बृहत्कथा* का संस्कृत में सबसे बड़ा संस्करण है।
- वेतालपञ्चविंशतिका— *बृहत्कथामञ्जरी* और *कथासरित्सागर* पर आधारित वेतालपञ्चविंशतिका में राजा विक्रम के द्वारा वेताल को ढोने और उस वेताल के द्वारा कही हुई 25 कथाओं का संग्रह है।
- सिंहासनद्वात्रिंशिका— *सिंहासनद्वात्रिंशिका* में 32 पुतलियाँ राजा भोज को 32 कहानियाँ सुनाती हैं।
- शुकसप्तति— इसमें तोता प्रत्येक रात्रि में सत्तर कहानियाँ सुनाता है, जिससे व्यापारी मदनसेन की पत्नी पथभ्रष्ट होने से बच जाती है।
- इन कथा-ग्रन्थों के अतिरिक्त बौद्धों, जैनों तथा वैदिक धर्मावलम्बियों ने भी अनेक कथा-ग्रन्थों की रचना की है—
- बौद्धकथा ग्रन्थों में— अवदानशतक, दिव्यावदान

  आर्यशूर — जातकमाला

  राजशेखर — प्रबन्धकोश

not to be republished © NCERT

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. *पञ्चतन्त्र* में कितने तन्त्र हैं? उनके नाम लिखिए।
प्र. 2. *पञ्चतन्त्र* की कथाओं का प्रचार किन-किन देशों में हुआ?
प्र. 3. *हितोपदेश* किसकी रचना है?
प्र. 4. *हितोपदेश* में कितने परिच्छेद हैं? उनके नाम लिखिए।
प्र. 5. *हितोपदेश* की रचना कहाँ हुई थी?
प्र. 6. *बृहत्कथा* के कथानक को जानने के लिए संस्कृत भाषा में कौन-कौन से ग्रन्थ हैं?
प्र. 7. *बृहत्कथा* श्लोक संग्रह किसकी रचना है? उसके श्लोकों की संख्या लिखिए।
प्र. 8. *वेतालपञ्चविंशतिका* में कितनी कहानियाँ हैं?
प्र. 9. *सिंहासनद्वात्रिंशिका* का दूसरा नाम क्या है?
प्र. 10. *शुकसप्तति* में वक्ता कौन है?
प्र. 11. संस्कृत के कथा ग्रन्थों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
प्र. 12. जैनों के तीन कथा ग्रन्थों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
प्र. 13. रिक्त स्थान भरिए—

(क) भारत का प्राचीनतम कथा संग्रह .... है।

(ख) कवि नारायण पण्डित के आश्रयदाता बंगाल के राजा .... थे।

(ग) *बृहत्कथा* की रचना .... ने .... भाषा में की।

(घ) बौद्ध लोक-कथाओं का प्राचीनतम ग्रन्थ .... शतक है।

(ङ) अशोक के पुत्र कुणाल की करुण कथा .... कथा ग्रन्थ में आई है।

(च) *जातकमाला* का .... कथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(छ) पुरुष-परीक्षा कथा ग्रन्थ .... की रचना है।

प्र. 14. कथा ग्रन्थ और लेखकों को मिलाइए—

कथा ग्रन्थ	**लेखक**
भोजप्रबन्ध	क्षेमेन्द्र
बृहत्कथामञ्जरी	सोमदेव
कथासरित्सागर	वल्लालसेन

प्र. 15. कवि और उनके काल को ठीक-ठीक मिलाइए—

कवि (लेखक)	**काल**
नारायण पण्डित	प्रथम शताब्दी
गुणाढ्य	ग्यारहवीं शताब्दी
क्षेमेन्द्र	900 ई.
सिद्धार्थ	चौदहवीं शताब्दी

Reprint 2026-27